University of Technology

# परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 12, दिसंबर 2025


| | | |
|---|---|---|
| प्रधान संरक्षक | - | श्रीमती मीनाक्षी सुराना |
| प्रमुख संरक्षक | - | डॉ. प्रेम सुराना |
| मुख्य संरक्षक | - | डॉ. अंशु सुराना |
| प्रेसिडेंट (कुलपति) | - | प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन |
| वरिष्ठ सलाहकार | - | प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार अग्रवाल |
| प्रधान संपादक | - | प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी |
| संपादक | - | डॉ. प्रेम कुमार |
| सह-संपादक | - | प्रो. (डॉ.) मोनिका शर्मा, डॉ. भाग्यश्री खरे |
| खेल संपादक | - | श्री यश यादव |

## प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर) महोदया का संदेश ...

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारी भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' का बारहवाँ अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल विश्वविद्यालय के बौद्धिक और सांस्कृतिक वातावरण की झलक प्रस्तुत करती है, बल्कि हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को भी एक सशक्त मंच प्रदान करती है। शिक्षण संस्थान केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होते, वे विचारों के आदान-प्रदान, रचनात्मकता और नवाचार के केंद्र होते हैं। परिसर प्रतिध्वनि इसी विचारधारा का प्रतिबिंब है, जो परिसर की सकारात्मक ऊर्जा, गतिविधियों और उपलब्धियों को समाज के समक्ष लाने का कार्य करती है। मैं पत्रिका की संपूर्ण संपादकीय टीम, सहयोगी सदस्यों, रचनाकारों तथा इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। आशा है कि यह अंक भी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा। विश्वविद्यालय परिवार की निरंतर प्रगति और समृद्धि हेतु मेरी शुभकामनाएँ सदैव आपके साथ हैं। विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को नववर्ष 2026 की हार्दिक शुभकामनाएँ....

**प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन**
प्रेसिडेंट (कुलपति)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

## कुलसचिव महोदय की कलम से...

प्रिय पाठकों,

'परिसर प्रतिध्वनि' के बारहवें अंक के प्रकाशन पर मैं सम्पूर्ण संपादकीय टीम को हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका न केवल हमारे शैक्षणिक परिसर की रचनात्मक गतिविधियों की जीवंत अभिव्यक्ति है, अपितु विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों की सृजनात्मकता को मंच प्रदान करने वाला प्रेरक माध्यम भी है। हर अंक के साथ यह पत्रिका नई ऊँचाइयों को छू रही है, जो यह दर्शाता है कि हमारे संस्थान में चिंतन, अभिव्यक्ति और नवाचार की निरंतर धारा प्रवाहित हो रही है। साहित्य, कला, संस्कृति और सामाजिक सरोकारों पर आधारित विविध लेख, कविताएँ और रचनाएँ पाठकों को न केवल प्रेरित करती हैं, बल्कि उन्हें एक व्यापक दृष्टिकोण भी प्रदान करती हैं। मैं आशा करता हूँ कि परिसर प्रतिध्वनि की यह यात्रा निरंतर प्रगति करती रहे और यह पत्रिका आने वाले समय में राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान स्थापित करे। पुनः सम्पूर्ण टीम को इस सराहनीय प्रयास के लिए शुभकामनाएँ, साथ ही सभी को नव वर्ष 2026 की हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ ...

**डॉ. अनूप शर्मा**
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय...

# शब्दों की प्रतिध्वनि में जागता है परिसर

प्रिय पाठकों,
सप्रेम नमस्कार

हम अत्यंत हर्ष और गर्व के साथ भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' अंक 12 का स्वागत करते हैं। यह अंक केवल एक औपचारिक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे शैक्षणिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति है- जिसमें हमारे विश्वविद्यालय परिवार के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों की सोच, संवेदना और सहभागिता की प्रतिध्वनि गूँजती है। पिछले अंकों की तरह यह अंक भी विचारों के संगम, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नवाचार के बीजों का साक्षी है। हमारे परिसर में घटित विविध गतिविधियाँ, रचनात्मक लेखन, सामाजिक मुद्दों पर विचार, और कला के रंग आदि इस अंक में समाहित हैं। यह पत्रिका हम सभी को लेखन, अभिव्यक्ति और संवाद का मंच प्रदान करती है, जिससे उनमें आत्मविश्वास का संचार होता है और वे अपने विचारों को स्वर दे पाते हैं।

परिसर प्रतिध्वनि की विशेषता यह है कि इसमें हमने पर्यावरण जागरूकता, नई शिक्षा नीति, महिला सशक्तिकरण, स्वतन्त्रता दिवस, राष्ट्रभक्ति और भारतीय संस्कृति में युवाओं की भूमिका जैसे विषयों पर युवाओं के दृष्टिकोण को प्रमुखता दी जाती रही है, इसके साथ ही विश्वविद्यालय में होने वाली समस्त सांस्कृतिक, सामाजिक एवं अकादमिक गतिविधियों की भी विस्तृत रिपोर्ट्स का भी प्रकाशन यथासमय किया जाता है। हमारे विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य कविता, लघुकथा, चित्रांकन और संस्मरणों के माध्यम से अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का अद्भुत परिचय देते रहे हैं। भित्ति पत्रिका के इस निरंतर प्रयास में हमारा उद्देश्य- **सृजन को प्रेरणा देना**, **विचारों को दिशा देना** और **संवाद की संस्कृति को प्रोत्साहित करना है।** यह केवल लेखन तक सीमित नहीं, बल्कि एक साझा मंच है जहाँ विचार बनते हैं, उभरते हैं और प्रेरणा देते हैं। अंत में, हम संपादकीय टीम, शिक्षकगणों और प्रशासनिक अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सतत सहयोग से यह अंक संभव हो पाया। आशा है कि यह अंक पाठकों के विचार और भावनाओं को एक नई दिशा प्रदान करेगा और हमारे परिसर में सृजनात्मकता की परंपरा को और समृद्ध करेगा। सृजन की यह यात्रा यूँ ही जारी रहे...

**डॉ. प्रेम कुमार**
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

**नोट:**
आप सभी से निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव हमें अवश्य दें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक प्रभावशाली व उपयोगी बनाया जा सके।

## विधि विद्यापीठ द्वारा संविधान दिवस(विधि दिवस) समारोह मनाया गया

दिनांक 26 नवंबर 2025 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की विधि विद्यापीठ एवं एनएसएस के स्वयंसेवियों के सहयोग से संविधान दिवस (विधि दिवस) बड़े उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन और प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी के आशीर्वाद व शुभकामनाओं से हुई। विश्वविद्यालय के उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराणा ने सभी विद्यार्थियों, एनएसएस सेवकों और विधि विद्यापीठ सदस्यों को प्रेरणादायक संदेश देकर उत्साहवर्धन किया। इसी क्रम में कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने कार्यक्रम की सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

समारोह का आरंभ अंबेडकर प्रतिमा स्थल की स्वच्छता गतिविधि से हुआ, जिसका संचालन श्री यश यादव के निर्देशन में किया गया। इसके उपरांत अंबेडकर समिति के अध्यक्ष मनीष बैरवा, अधिष्ठाता प्रोफ़ेसर (डॉ.) मोनिका शर्मा, डॉ. प्रेम कुमार और श्री सुरेंद्र तेतरवाल ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की।

इसके बाद विधि संकाय की छात्रा सुश्री सुमन द्वारा संविधान की प्रस्तावना वाचन किया गया, जिसने कार्यक्रम में संवैधानिक मूल्यों की गरिमा को और बढ़ाया। तत्पश्चात विधि छात्रों ने बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन और उनके संवैधानिक योगदान पर आधारित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। छात्रों द्वारा मौलिक अधिकारों एवं मौलिक कर्तव्यों पर आधारित जागरूकता रैली भी निकाली गई, जिसके माध्यम से समाज में संवैधानिक संदेशों का प्रसार किया गया। इसके पश्चात बीएलओ मोहनजी यादव ने सत्र में एसआईआर एवं चुनाव के महत्व, मतदान प्रक्रिया तथा एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। इस आयोजन की सफलता में श्री लतीफ, श्री राजनारायण शर्मा, सुश्री हिमांशी श्रीवास्तव, सुश्री ज्योति चौहान, सुश्री प्रतिभा वशिष्ठ सहित सभी विधि छात्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनकी सक्रिय भागीदारी और समर्पण से संविधान दिवस (विधि दिवस) का यह कार्यक्रम अत्यंत सफल और प्रेरणादायक बन सका।

## विशेष शिक्षा विभाग द्वारा विश्व दिव्यांगता दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ सम्पन्न

दिनांक 03 दिसंबर 2025 को विश्व दिव्यांगता दिवस के अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विशेष शिक्षा विभाग द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष शिक्षा विभाग के विद्यार्थियों द्वारा मनभावक प्रस्तुतियां प्रस्तुत की गईं। दिव्यांगता दिवस कार्यक्रम में न केवल विद्यार्थियों ने अपितु विशेष शिक्षा विभाग के सहायक अध्यापकगण श्रीमती सीमा चौधरी व श्री मनीष कुमार मीणा ने विद्यार्थियों के साथ मिलकर दिव्यांगता से संबंधित एक लघु नाटिका बेहद ही रोचक अंदाज में प्रस्तुत की, जिसका शीर्षक सृष्टि देवी रहा। उपरोक्त सभी कार्यक्रम दिवयांगता को केंद्र में रखकर किए गए थे, जिनका उद्देश्य दिव्यांगता के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता तथा समावेशी शिक्षा के महत्व को उजागर करना था। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. रश्मि जैन (प्रेसिडेंट, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर) ने बताया की दिव्यांग व्यक्तियों को केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि अधिकार, अवसर और समान भागीदारी की आवश्यकता है। शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे सुलभता, तकनीकी सहायता और समावेशी वातावरण प्रदान करें।उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए पोस्टर्स की सराहना करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी सबसे प्रभावी बदलाव लाने की क्षमता रखती है।

इस कार्यक्रम में डीएड वीआई के विद्यार्थी शौकीन गुर्जर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि वह झुग्गी बस्ती में जाकर बच्चों को मुफ्त में शिक्षा प्रदान कर रहा है, साथ ही शौकीन गुर्जर ने झुग्गी बस्ती के उन बच्चों को भी इस कार्यक्रम में शामिल कर मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर विश्वविद्यालय के उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना विशेष अतिथि, प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन, प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी, कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल जांगीड़ उपस्थित रहे। अतिथियों द्वारा कार्यक्रम की भरपूर सराहना की गई तथा दिव्यांग बालकों हेतु जागरूकता संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता

विद्यापीठ की अधिष्ठाता डॉ. वंदना सिंह ठाकुर द्वारा की गई थी। विश्व दिव्यांगता जागरूकता के अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के विशेष शिक्षा विभाग द्वारा पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में दिव्यांगता के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता तथा समावेशी शिक्षा के महत्व को उजागर करना था। कार्यक्रम के अंत में दिव्यांगता दिवस पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता के विजेता व झुग्गी झोपड़ियों से आमंत्रित किए गए बालकों को पुरस्कार वितरण किए गए। विभाग की छात्रा अलका यादव द्वारा मंच का संचालन बहुत ही गरिमापूर्ण ढंग से किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री राघवेन्द्र यादव, श्रीमती सीमा चौधरी, सुश्री गीता रानी, सुश्री भावना रावत, श्री मनीष कुमार मीणा एवं श्री धीरज कुमार नागर आदि प्राध्यापकों ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। अंत में डॉ. वंदना सिंह ठाकुर(अधिष्ठाता) ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

## आधुनिक युग में ई-पुस्तक का महत्व

आधुनिक युग सूचना और तकनीक का युग है। इस युग में ई-पुस्तक (E-Book) ने ज्ञान प्राप्त करने के तरीके को सरल, तेज़ और सुलभ बना दिया है। ई-पुस्तकें डिजिटल रूप में उपलब्ध होती हैं, जिन्हें मोबाइल, टैबलेट, कंप्यूटर या ई-रीडर पर आसानी से पढ़ा जा सकता है।

ई-पुस्तकों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वे कहीं भी और कभी भी उपलब्ध रहती हैं। एक छोटे से मोबाइल में हजारों पुस्तकें संग्रहित की जा सकती हैं, जिससे स्थान और वजन की समस्या समाप्त हो जाती है। विद्यार्थी, शोधार्थी और शिक्षक कम समय में अधिक सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

ई-पुस्तकें कम लागत में उपलब्ध होती हैं और कई पुस्तकें तो निःशुल्क भी मिल जाती हैं। इससे शिक्षा सबके लिए सुलभ बनती है। साथ ही, ई-पुस्तकें पर्यावरण के अनुकूल होती हैं क्योंकि इनके लिए कागज़ की आवश्यकता नहीं होती।

ई-पुस्तकों में सर्च, हाइलाइट, नोट्स और ज़ूम जैसी सुविधाएँ होती हैं, जो अध्ययन को और प्रभावी बनाती हैं। दिव्यांग व्यक्तियों के लिए ऑडियो बुक और फॉन्ट साइज बदलने की सुविधा भी बहुत उपयोगी है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में ई-पुस्तकें ज्ञान का सशक्त माध्यम हैं और डिजिटल भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

**श्री जितेन्द्र कुमार योगी**
पुस्तकालयाध्यक्ष, केन्द्रीय पुस्तकालय
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

# अत्यंत उत्साहपूर्ण ढंग से मनाया गया विश्व मानवाधिकार दिवस

दिनांक 10 दिसंबर 2025 को विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने अपने सम्बोधन में छात्रों को मानवाधिकारों के महत्व के बारे में बताया। प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी और कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने भी छात्रों को मानवाधिकारों की जानकारी दी और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी।

विश्वविद्यालय के उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना ने छात्रों को संदेश देते हुए कहा कि मानवाधिकार केवल अधिकार नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी भी है, और हमें अपने अधिकारों के साथ-साथ दूसरों के अधिकारों का भी सम्मान करना चाहिए। कार्यक्रम में सभीविद्यापीठों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष और एनएसएस के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। एनएसएस की छात्राओं सुश्री रिहान और सुश्री तनिषा मीणा ने मानवाधिकारों की उपयोगिता एवं महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में डी.एड. (एचआई) की छात्रा प्रिया चौधरी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में एनएसएस के प्रबंधक श्री यश यादव ने भी छात्रों को मानवाधिकारों के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय की एनएसएस शाखा द्वारा किया गया था।

## सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का सफ़ल आयोजन

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में इंस्टिट्यूशन्स इनोवेशन काउंसिल (IIC) द्वारा दिनांक 11 दिसंबर 2025 को 'Drive Safe, Arrive Safe' विषय पर सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कम्युनिटी फॉर सेफर रोड्स (CFSR) तथा होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया प्रा. लि., नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा, सुरक्षित वाहन संचालन और यातायात अनुशासन के प्रति जागरूक करना था। होंडा मोटरकॉर्प लि. की ट्रेनर सुश्री ज्योति ने विद्यार्थियों को हेलमेट उपयोग, ट्रैफिक संकेतों का पालन और सुरक्षित ड्राइविंग से संबंधित आवश्यक जानकारी दी।

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने अपने स्वागत वक्तव्य के दौरान कहा- "सड़क सुरक्षा जागरूकता जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में जिम्मेदारी, अनुशासन और सामाजिक चेतना को मजबूत करते हैं। IIC टीम और सहयोगी संस्थाओं को इस सफल आयोजन के लिए बधाई देती हूँ।" विश्वविद्यालय के प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने कहा- "विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाना समय की आवश्यकता है। ऐसे कार्यक्रम उन्हें वास्तविक जीवन में सुरक्षित व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।" विश्वविद्यालय के उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना ने वाहनों को चलाते समय सड़क सुरक्षा से जुड़ी कई बातों को ध्यान में रखने की सलाह देते हुए कहा- "सड़क सुरक्षा संबंधी जागरूकता भविष्य की पीढ़ी को सुरक्षित और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ऐसे कार्यक्रम विश्वविद्यालय के समग्र विकास को मजबूत करते हैं।" कार्यक्रम के दौरान कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा तथा परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगिड़ भी उपस्थित रहे। अंत में IIC टीम ने सभी अतिथियों, समन्वयकों और विद्यार्थियों का धन्यवाद व्यक्त किया तथा आगे भी ऐसे उपयोगी एवं जागरूकता बढ़ाने वाले कार्यक्रम आयोजित करते रहने का वायदा किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सागर कुमार और डॉ. रजनी माथुर थे, तथा कार्यक्रम में मंच संचालन सुश्री रिहान ने किया।

## विशेष शिक्षा विभाग द्वारा विशिष्ट अधिगम अक्षमता विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ आयोजित

यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विशेष शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 12 दिसंबर 2025 को अधिष्ठाता डॉ. वंदना सिंह ठाकुर के निर्देशन में एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान की मुख्य वक्ता डॉ. माया बोहरा (पुनर्वास मनोवैज्ञानिक व साइको थेरेपिस्ट) रहीं और व्याख्यान का शीर्षक 'विशिष्ट अधिगम अक्षमता' था। डॉ. माया बोहरा द्वारा विशिष्ट अधिगम अक्षमता शीर्षक पर बहुत ही महत्वपूर्ण व ज्ञानवर्धक जानकारियों सहित व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इन्होंने अपने व्याख्यान में अधिगम अक्षमता से संबंधित जानकारियां विभिन्न वीडियो को दिखाते हुए विद्यार्थियों को समझाने का सफल प्रयास किया। विद्यार्थियों ने भी व्याख्यान का भरपूर लाभ उठाया। संगोष्ठी कक्ष में उपस्थित सभी शिक्षक एवं विद्यार्थी इस व्याख्यान की रोचकता से बेहद प्रभावित हुए व तालियों की गूंज से अपने प्रसन्नता को प्रकट किया गया। यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी की प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने कार्यक्रम की प्रसन्नता करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम न केवल पाठ्यक्रम में लाभकारी है अपितु विशेष छात्र की पहचान में भी मददगार रहेगा, साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार के व्याख्यान से विद्यार्थियों को और अधिक नई-नई जानकारी प्राप्त होती है, जिससे वे एक विशेष शिक्षक के रूप में अपने आप को अच्छे तरीके से तराशते हैं।

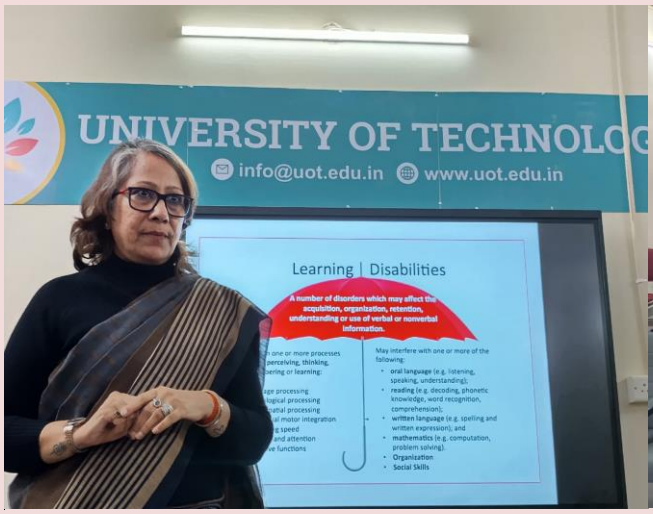

प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा- "जब तक आप किसी चीज़ को एक से अधिक तरीकों से नहीं सीखते तब तक आप उसे समझ नहीं पाते। अत: सीखने के लिए बालकों को हमेशा तत्पर रहना चाहिए।" इस अवसर पर प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने कार्यक्रम के अंत में डॉ. माया बोहरा का उनकी इस कार्यक्रम में उपस्थिति व बालकों को महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत करवाने के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में डॉ. अनूप शर्मा(कुलसचिव), डॉ. कमल किशोर जांगीड(परीक्षा नियंत्रक) सहित श्री राघवेन्द्र यादव, श्रीमती सीमा चौधरी, सुश्री गीता रानी, सुश्री भावना रावत, श्री मनीष कुमार मीणा एवं श्री धीरज नागर आदि प्राध्यापक उपस्थित रहे। अंत में डॉ. वंदना सिंह ठाकुर(अधिष्ठाता) ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

# राजनीति: एक परिवर्तन की शक्ति

राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज को दिशा देने वाला एक सशक्त यंत्र है। जब हम 'राजनीति' शब्द सुनते हैं, तो हमारे मन में अक्सर नकारात्मक छवियाँ उभरती हैं- भ्रष्टाचार, छल, और वादों की पूर्ति न होना। किंतु यदि राजनीति को रचनात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यह समाज निर्माण, जनसेवा और राष्ट्र निर्माण का सबसे प्रभावशाली साधन बन सकती है।

**राजनीति का मूल उद्देश्य:** राजनीति का मूल उद्देश्य है- जनकल्याण। एक सच्चा राजनेता वही होता है जो लोगों की समस्याओं को समझे, उन्हें सुनकर समाधान दे, और विकास की ओर उन्हें प्रेरित करे। प्राचीन भारत में राजा को 'प्रजा का रक्षक' कहा जाता था। आज भी लोकतंत्र में चुना गया जनप्रतिनिधि उसी भूमिका में होता है।

**रचनात्मक राजनीति की आवश्यकता:** आज के समय में जब देश सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रहा है, तब राजनीति को केवल चुनावी हथकंडों से निकालकर एक *रचनात्मक प्रक्रिया* के रूप में देखा जाना चाहिए। रचनात्मक राजनीति वह है जो:

- नई सोच को बढ़ावा देती है,
- समाज के हर वर्ग को प्रतिनिधित्व देती है,
- युवाओं और महिलाओं को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है,
- लोकनीति को जननीति से जोड़ती है।

**राजनीति और युवा:** देश का भविष्य युवा वर्ग है। यदि युवा राजनीति में सक्रिय भागीदारी नहीं करेगा, तो नेतृत्व की बागडोर गलत हाथों में जा सकती है। एक शिक्षित, सजग और संवेदनशील युवा वर्ग रचनात्मक राजनीति का आधार बन सकता है। आज ज़रूरत है कि हम राजनीति को 'गंदा खेल' मानकर उससे दूर न रहें, बल्कि उसे सुधारने के लिए उसके भागीदार बनें।

**राजनीति और जनभागीदारी:** रचनात्मक राजनीति का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ है जनभागीदारी। जब आम जनता जागरूक होती है, अपने अधिकारों और कर्तव्यों को जानती है, तब वह नेताओं से जवाबदेही मांगती है। इससे राजनीति पारदर्शी और उत्तरदायी बनती है।

**निष्कर्ष:** राजनीति एक दर्पण है- जैसे समाज होगा, वैसी राजनीति होगी। अगर हम चाहते हैं कि हमारी राजनीति ईमानदार, संवेदनशील और विकासशील हो, तो हमें भी एक जागरूक नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा। रचनात्मक राजनीति ही वह माध्यम है, जिससे हम एक समतामूलक, समावेशी और स्वावलंबी भारत का निर्माण कर सकते हैं।

**डॉ. सीताराम माली**
सह-आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

# पर्यावरण : वर्तमान संकट और भविष्य की राह

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ प्रकृति के साथ हमारा संबंध भी जटिल होता गया है। प्राचीन काल में मनुष्य ने प्रकृति को माँ के रूप में पूज्य माना, परंतु आधुनिक युग में उसी प्रकृति का दोहन, शोषण और विनाश तेजी से किया जा रहा है। आज जब हम 'विकास' के शिखर की ओर बढ़ रहे हैं, तब हमें यह भी विचार करना चाहिए कि कहीं यह प्रगति हमारे पर्यावरण के पतन की कीमत पर तो नहीं हो रही?आज का यथार्थ यही है कि पर्यावरण संकट एक वैश्विक समस्या बन चुका है। वनों की अंधाधुंध कटाई, औद्योगीकरण, वाहन प्रदूषण, रासायनिक कृषि और प्लास्टिक जैसी कभी न नष्ट होने वाली वस्तुओं का अत्यधिक प्रयोग पृथ्वी की जीवनदायिनी प्रणाली को गहरा आघात पहुँचा रहा है। वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसों की मात्रा तेजी से बढ़ रही है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

**पर्यावरणीय संकट के प्रमुख कारणों में शामिल हैं:**

1. **अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि**- संसाधनों पर अत्यधिक दबाव।
2. **औद्योगिक प्रदूषण**- जल, वायु और भूमि का विषाक्त बनना।
3. **वनों की कटाई**- जैव विविधता का नाश और पारिस्थितिकी संतुलन का विघटन।
4. **अनियंत्रित शहरीकरण**- कंक्रीट के जंगलों का विस्तार और प्राकृतिक आवासों का विनाश।

**परिणाम:**

- ग्लेशियरों की बर्फ पिघल रही है।
- समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है।
- जलवायु अनियमित हो गई है।
- सूखा, बाढ़, तूफान जैसी आपदाएँ आम होती जा रही हैं।
- जैव विविधता विलुप्त हो रही है।

**अब समय है आत्ममंथन का**

हमें विचार करना होगा कि हम अपने आने वाली पीढ़ियों को कैसी धरती सौंपना चाहते हैं – हरी-भरी, शुद्ध वायु और जल से युक्त अथवा प्रदूषित, तपती और जीवविहीन?

**समाधान की दिशा में कुछ ठोस प्रयास आवश्यक हैं:**

- वृक्षारोपण को जीवनशैली का हिस्सा बनाना।
- पर्यावरण शिक्षा को प्रारंभिक स्तर से ही अनिवार्य करना।
- प्लास्टिक के स्थान पर जैविक विकल्प अपनाना।
- अक्षय ऊर्जा स्रोतों को प्राथमिकता देना।
- जल संरक्षण की आदतें विकसित करना।

अतः पर्यावरण की रक्षा कोई विकल्प नहीं, अनिवार्यता है। यदि हमने अब भी नहीं सोचा, तो भविष्य की पीढ़ियाँ हमें क्षमा नहीं करेंगी। प्रकृति के साथ सामंजस्य ही वास्तविक प्रगति है। इस मंत्र को हमें जीवन का आधार बनाना होगा। धरती हमारी माता है, इसका रक्षण हमारा धर्म।

**डॉ. प्रेम कुमार**
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

## प्रकृति

जब सुबह सूरज की पहली किरणें धरती को छूती हैं, तो लगता है जैसे ईश्वर ने अपने रंगों से एक नया कैनवास रच दिया हो। खेतों में फैली ओस की बूंदें जैसे चाँदी के मोती हों, और झीलों का शांत जल मानो कोई दर्पण हो जो आकाश को अपने भीतर समेटे हुए है। पहाड़ों की ऊँचाइयाँ जीवन के संघर्षों की तरह लगती हैं कठिन, पर सुंदर। और जंगलों की गहराइयाँ हमें सिखाती हैं कि शांति कहीं बाहर नहीं, भीतर होती है।प्रकृति केवल देखने की वस्तु नहीं, जीने की प्रेरणा है। जब हम उससे जुड़ते हैं, तो जीवन सरल और सजीव हो जाता है। मनुष्य और प्रकृति का संबंध सदियों पुराना है, लेकिन आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम उससे दूर होते जा रहे हैं। मोबाइल की स्क्रीन, गाड़ियों का शोर, और कंक्रीट की इमारतें सब मिलकर हमें प्रकृति की गोद से दूर ले गए हैं। पर सच तो यही है कि जितना हम प्रकृति के पास जाते हैं, उतना ही हम अपने आप से जुड़ते हैं।

**प्रकृति: सबसे बड़ा शिक्षक**

प्रकृति धैर्य सिखाती है, जैसे बीज मिट्टी में दब कर भी उम्मीद नहीं छोड़ता।
वह संतुलन सिखाती है, जैसे दिन के बाद रात आती है, और फिर नया सवेरा होता है।
वह प्रेम सिखाती है, बिना भेदभाव, हर जीव को समान रूप से पोषण देती है। अगर हम ध्यान से देखें, तो प्रकृति हमें जीवन जीने की सबसे सुंदर शैली सिखाती है सादगी, सहनशीलता और सामंजस्य।

**सुश्री खुशबू चौधरी**
सहायक आचार्य, अंग्रेजी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर